नरक की सच्चाई

अनंतकाल में अंतदृष्टि

नरक-एक ऐसा विषय जिसे अन्देखा नही किया जा सकता

आज हम एक ऐसे विषय का अध्ययन करेंगें जिसे अधिकाँश पासबान व अध्यापक अन्देखा कर देते हैं। सच्चाई यह है कि हम सब ही इस विषय पर बात करना भी पसन्द नही करते, यह विषय कोई और नही बल्कि नरक का ही विषय है। सी.एस. लिविस के बारे में एक कहानी प्रचलित है कि वह एक जवान प्राचारक को पाप पर परमेश्वर के न्याय के विषय पर सुन रहे थे। प्रचार के अन्त में वह प्रचारक बोला "यदि तुम परमेश्वर को अपने उद्धारकर्ता के रूप में नही मानोगे तो तुम्हे अंनतकालीन समस्याओं का सामना करना पड़ेगा।" प्रार्थना सभा के बाद लिविस ने उनसे प्रश्न किया, "क्या आप यह कहना चाहते हो कि जो व्यक्ति परमेश्वर पर विश्वास नही करता वह नरक जायेगा?" "हाँ बिल्कुल सही" प्रचारक ने उत्तर दिया। लिविस ने कहा, "अच्छा ठीक है।"[1] चाहे यह हमारे लिए असुविधाजनक क्यों न हो इस विषय का अध्ययन हम सब के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

कुछ तो यह भी कहेंगे, "क्यों न हम इस नरक के विषय को दरकिनार कर दें?" चाल्र्स स्परजन (जो एक महान प्रचारक थे) ने कहा था, यदि हम नरक के विषय को महत्व नही देंगे तो हम क्रूस को भी महत्व नही देंगे। दुःखी और खोई हुई आत्माओं को अनदेखा करने से हम अपने उद्धारकर्ता को अनदेखा करते हैं, जिसने हमें दुखों से छुटकारा दिया है। यह कह सकते है कि कुछ लोग नरक के विषय को इसलिए अनदेखा करते हैं, क्योंकि वह मृत्यु को एक जीवन के अन्त के रूप में देखते हैं, जबकि यह तो जीवन की शुरूआत हैं। जब हम इसकी सच्चाई को समझेंगे और जानेंगे कि हमारा जीवन परमेश्वर के बिना क्या है, तभी हम यीशु को पायेंगे और [illegible] क्रूस पर [illegible] किया। [illegible] हम लोगों को शैतान के चंगुल से बचाँए ताकि नरक में न डाले जाँए। प्रत्येक व्यक्ति को परमेश्वर अत्याधिक प्रेम करता है, तथा वह यह नही चाहता कि उस व्यक्ति का विनाश हो, परन्तु परमेश्वर चाहता है कि वह प्रायश्चित करे। (२ पन्नस ३:१) परन्तु क्या होगा अगर वे ऐसा नही करतें? क्या होगा यदि उसकी मृत्यु यीशु को बिना जाने हो जाती है? क्या हो यदि वह परमेश्वर के प्रेम के संदेश व सुसमाचार के प्रति प्रतिउत्तर देते? यीशु के पुर्नागमन पर वह भेड़ों (विश्वासी) को बकरियों से (अविश्वासी) से अलग करेगा और यह बताया गया है कि [illegible] अनंतकालीन होगा। ४१ तब वह बाईं ओर वालों से कहेगा, हे स्त्रापित लोगो, मेरे सामने से उस अनन्त आग में चले जाओ, जो शैतान और उसके दूतों के लिये तैयार की गई है। ४२ क्योंकि मैं भूखा था, और तुम ने मुझे खाने को नहीं दिया, मैं प्यासा था, और तुम ने मुझे पानी नहीं पिलाया। ४३ मैं परदेशी था, और तुम ने मुझे अपने घर में नही ठहराया; मैं नंगा था, और तुम ने मुझे कपडे नहीं पहिनाए; बीमार और बन्दीगृह में था, और तुम ने मेरी सुधि न ली।

---

[1] Taken from: http:/www.leaderu.com/orgs/probe/docs/Hellhtml

४४ तब वे उत्तर देंगे, कि हे प्रभु, हमने तुझे कब भूखा, या प्यासा, या परदेशी, या नंगा, या बीमार, या बन्दीगृह में देखा, और तेरी सेवा टहल न की ? ४५ तब वह उन्हें उत्तर देगा, मैं तुमसे सच कहता हूँ कि तुमने जो इन छोटे से छोटों में से किसी एक के साथ नहीं किया, वह मेरे साथ भी नहीं किया। ४६ और यह अनन्त दण्ड भोगेंगे परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे। **(मत्ती२५:४१-४६)**

जैसे कि हम पहले भी बता चुके हैं, कि आज के समय के जीवन और मृत्यु के अनुभवों के विषय पर लोगों का अधिक रूझान है। इस विषय पर पुस्तकें आसानी से मिल जाती है। इस श्रृंखला की प्रथम श्रेणी में हमने डॉ रेयमंड ऐ. मूडी की पुस्तक ''लाईफ ऑफ्टर लाईफ'' (जीवन के बाद जीवन) के बारे में बताया था। उन्होंने एक सौ पच्चास से अधिक मृत्यु के करीब पहुंचने वाले व्यक्तियों के अनुभवों पर शोध कार्य किए। इसी प्रकार एक और डॉक्टर, डॉ. मौरिस रॉलिंग्स ने अपनी पुस्तक ''टू हेल एण्ड बैक'' (नरक तक और वापस) जिससे उन्होंने भी मृत्यु के करीब पहुंचने वाले लोगों के अनुभव लिखे, बताया कि लोगों ने ऐसे में नरक का अनुभव किया पर कुछ समय तक ही उन्हें वह याद रहा। उन्होंने यह भी कहा कि, वह सत्य है कि मनुष्य वह ही याद रखता है जो अच्छा है वरन वह बाकी सब जो बुरा है भूल जाता है और इसलिए यदि ऐसे व्यक्तियों का अनुभव जानने के लिए उनका साक्षात्कार देर से लिया जाए (दिन, हफ्ते, या महीने के बाद), तब उनको केवल सकारात्मक अनुभव ही याद रहते हैं।

डॉ. रालिंगस ने एक व्यक्ति का अनुभव बताया है जिसके हृदय में पेसमेकर शल्य क्रिया द्वारा लगाया गया था। उस व्यक्ति ने डॉ. रालिंगस को बताया कि उसने नरक को देखा ही नहीं बल्कि अनुभव भी किया। उसने एक लम्बी सुरंग देखी जो रौशनी की तरफ खुल रही थी, परन्तु फिर उस सुरंग में आग लग गयी। उस व्यक्ति को ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो वह तेजी से उस आग के तालाब की ओर बढ़ रहा है, मानों जैसे स्वयं ही घी और आग की ज्वाला तेजी से उसकी ओर बढ़ रही है। उस व्यक्ति ने गहरी लम्बी परछाइयां भी देखीं जो आगे-पीछे घूम रही थीं, मानों जैसे बन्द पिंजरे में जंगली जानवर घूमते हैं। वह व्यक्ति जोर से चिल्लाया 'यीशु ही परमेश्वर है'' और फिर अचानक वह अपने शरीर में वापस लौट आया। इसी प्रकार डॉ. रौलिंगस ने एक और वाक्या बताया, डॉक्टर उस व्यक्ति को सी.पी.आर. दे रहे थे, उसको भी पेसमेकर लगा था और वह व्यक्ति बार-बार होश में आता और फिर बेहोश हो जाता। जब वह होश में आता तो वह डॉ. रौलिंगस से चिल्ला-चिल्लाकर आग्रह करता कि वह उसके लिए परमेश्वर से प्रार्थना करें क्योंकि वह नरक में है। डॉ रौलिंगस उस व्यक्ति के लिए प्रार्थना नहीं करना चाहते थे क्योंकि वह तब तक स्वयं भी विश्वासी नहीं थे। परन्तु वह उस व्यक्ति की व्यथा को देखकर अंततः उन्होंने उसके लिए एक प्रार्थना की।

उन्होंने प्रभु यीशु से कहा कि वह इस व्यक्ति को नरक के द्वार से दूर रखें। और वह व्यक्ति उसी क्षण शान्त हो गया। वह व्यक्ति अब पागलों की तरह नहीं चिल्ला रहा था। डॉ. रौलिंगस कहते हैं कि उनके इस अनुभव ने उनके जीवन पर अत्याधिक प्रभाव डाला और उन्होंने अपना जीवन यीशु को दे दिया। डॉ. रालिंग्स कोई शास्त्री या प्रचारक नहीं है बल्कि वह एक डाक्टर है, जिन्होंने अपने अनुभव लिखे हैं, कि किस प्रकार उनहोंने अपने मरीज़ को पुनर्जीवित किया।

बहुत से लोग यह दावा करते है कि उन्होंने मृत्यु को नजदीक से देखा और अनुभव किया है, किन्तु यह कितना सत्य है, इसका कोई प्रमाण नहीं है। यह माना जा सकता है, कि यदि ईश्वर ने पौलूस को तीसरे स्वर्ग तक जाने की अनुमति दी थी, और यदि इस्तिफनुस ने यीशु को अपनी मृत्यु से ठीक पहले परमेश्वर के दायने हाथ खड़े देखा, तो यह सत्य है कि आज के युग में भी बहुत से ऐसे लोग होंगे, जिन्हे परमेश्वर ने मृत्यु के पश्चात् के जीवन की एक झलक देखने की अनुमति दी होगी।

परन्तु हमारा विश्वास लोगों के अनुभव पर नहीं वरन परमेश्वर के वचन पर आधारित होना चाहिए क्योंकि ऐसे भी लोग हैं, जो यह विश्वास करते हैं कि प्रत्येक जन चाहे जैसा भी जीवन जीने वाला हो उसका शान्ति

और प्रकाश से भरे हुए अनन्त जीवन में स्वागत किया जाता है। परन्तु यह सब वचन के अनुसार मान्य नहीं है।[2] प्रभु यीशु प्रेम और सत्य का रूप है, उन्होंने अपने शिष्यों से कुछ भी नहीं छिपाया। परमेश्वर अकसर नरक के बारे में बातें करते थे तथा उनके बहुत से दृष्टान्त स्वर्ग, नरक, अन्तिम न्याय तथा अनन्त पुरूस्कार पर आधारित हैं। यदि यीशु के लिए यह विषय महत्वपूर्ण था, कि वह अपने शिष्यों को इन सबका ज्ञान दें तो यह सही होगा कि हम भी इन तथ्यों पर गहन विचार करें और गम्भीरता से स्वर्ग तथा नरक के विषय पर ध्यान दें। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि शैतान धोका देता है, वह झूठ का पिता है तथा उसको प्रकाश का स्वर्गदूत भी कहा जाता है। कुछ कहानियां ऐसी हो सकती है जिसमें परमेश्वर को महिमानवित किया जाता है और वह सत्य भी हो सकती है। परन्तु हमारा विश्वास केवल परमेश्वर पर और उसके वचन पर होना चाहिए, कहानियों पर नहीं। यह माना जा सकता है कि शैतान सच्चाई को छिपाकर अथवा बदलकर यह जताना चाहता है कि सभी रास्ते जो परमेश्वर को महिमानवित करते है, वह अन्त मे परमेश्वर तक पहुंच पाते हैं।

क्या मृत्य विनाश की दशा है?

कुछ लोगों के अनुसार नरक वह स्थान है, जहां उन लोगों का विनाश किया जाता है, जो प्रभु यीशु के द्वारा दी गयी मुफ्त क्षमा को स्वीकार नहीं करते। विनाश का सही अर्थ है, ''पूर्णतः समाप्त हो जाना अथवा बर्बाद हो जाना।'' प्रभु यीशु ने वचन में युनानी भाषा का शब्द एइनोइस का दो बार प्रयोग किया जब वह अपने शिष्यों के आनन्द को व्यक्त कर रहे थे। जिसका अर्थ है, ''अनन्त, लगातार। जब अनन्त जीवन की बात करते हैं, तो उसका अर्थ है एक ऐसा जीवन जो परमेश्वर के जीवन को दर्शाता है, जिससे समय की प्रतिबंद्धता नहीं है।२ परन्तु यह विनाश जैसा नहीं है। प्रभू यीशु ने यह स्पष्ट सिखाया है कि यदि कोई व्यक्ति वचन को नकारता है और पाप के जीवन में जीता है, तो वह अपने जीवन के अन्त में अनन्त दण्ड को भोगेगा।

स्वेतलाना स्तालिन, जोसेफ स्तालिन की पुत्री (जो १९२२ से १९५३ तक रूस के अगवा थे) ने जब अपने पिता के साथ उनके जीवन के अंतिम पलों को बिताया तब उन्होंने अपने अनुभव से बताया कि वह अब किसी भी अविश्वासी के साथ उनके अन्त समय में साथ नहीं रहेगी। उन्होंने बताया कि उनके पिता नरक में चीखते-चिल्लाते हुए गये। ''जीवते परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है।'' (इब्रानियों १०:३१) कहते है कि बोल्यैर की मृत्यु अत्यन्त दर्दनाक थी, इसी तरह फ्राँस क राजा चार्ल्स ९, डेविड हुए तथा थाॅमस पेन की भी मृत्यु अत्यन्त दर्दनाक थी। सी. एम. वाॅर्ड उन लोगों के लिए कहते हैं जो परमेश्वर को जानते हैं'' कोई भी विश्वासी आज तक, अपनी मृत्यु शैय्या पर (परमेश्वर के प्रेम से) फिरे नहीं है।

१) प्रेमी परमेश्वर क्यों किसी मनुष्य को नरक में भेजेगा? किसी व्यक्ति को कितना बुरा होना होगा कि वह नरक में भेजा जाए? क्या कोई ऐसी रेखा निश्चित है जिसे किसी व्यक्ति को पार करना होगा?

१६ क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। १७ परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा, कि जगत पर दंड की आज्ञा दे परन्तु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए। १८ जो उस पर विश्वास करता है, उस पर दंड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु जो उस पर विश्वास नही करता, वह दोषी ठहर चुका; इसलिये कि उस ने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वा नहीं किया। **(यहुन्ना ३:१६-१८)**

---

[2]Key Word Study Bible, New Lexical Study Aids, AMG Publishers, page 1580.

सृष्टिकर्ता परमेश्वर ने उद्धार का मार्ग बनाया है, और सभी मनुष्य एक नाँव में सवार हैं, क्योंकि हम में से कोई भी व्यक्ति उसके द्वारा तय किए गए मापदंड तक नहीं पहुँचाता। हम में से कोई भी यह नही कह सकता कि हमने पाप नही किया। यदि हमने एक भी पाप किया है तो हम पापी है।हम सब एक ही रोग से ग्रस्त हैं। पाप हमे परमेश्वर से हमेशा के लिए दूर करता है। याकूब अपनी पुस्तक में कहता है "क्योंकि जो कोई सारी व्यवस्था का पालन करता है परन्तु एक ही बात में चूक जाए तो वह सब बातों में दोषी ठहरा।" (याकूब २:१०)यदि परमेश्वर के पास कोई व्यवस्था होती जिसके द्वारा वह आप सबको स्वर्ग पहुँचा सकता और उसके पुत्र को दर्दनाक मृत्यु का सामना न करना पड़ता तो क्या वह उस रास्ते को नही अपनाता? उसने मनुष्य को स्वेच्छा का दान किया है, किन्तु न्याय के अनुसार विद्रोही को दण्डित किया जाना जरूरी हैं। पवित्र परमेश्वर पाप को अपने सम्मुख सर उठाने नही देगा। "तेरी आंखें ऐसी शुद्ध हैं कि तू बुराई को देख ही नहीं सकता, और उत्पात को देखकर चुप नहीं रह सकता; फिर तु विश्वासघातियों को क्यों देखता रहता, और जब दुष्ट निर्दोष को निगल जाता है, तब तू क्यों चुप रहता है"? (हबक्कूक १:१३) इसलिए परमेश्वर हमें जब हम पश्चताप नहीं करते चुनाव करने की स्वतंत्रता देता है।
परमेश्वर ने अपने असीम प्रेम में हमे बचाने के लिए एक योजना बनायी है। उसका पुत्र मनुष्य का रूप धारण करेगा और हम पापीयों की जगह दण्ड भोगेगा। इस प्रकार परमेश्वर का न्याय पूरा ठहरेगा, और वह प्रेम से उन सब को बचा सकेगा जो अपना जीवन उसे देंगे तथा उसके बताये हुए मार्ग पर चलेंगे। जब हम पश्चताप करते है तब परमेश्वर का आत्मा हमें सामर्थ देता है कि हम अपना जीवन प्रभु यीशु के लिए जी सकें। हम दूसरे के लिए भी उत्तर देने की क्षमता रखते है और पवित्र आत्मा हमे सामर्थ और हियाव देता है कि हम लोगों से परमेश्वर की योजना के बारे में बात कर सकें। जब भी हम परमेश्वर की सच्चाई के बारे में बात करते है, तो हम शैतान के राज्य को नष्ट कर देते है और लोगों को उसके चंगुल से छुडा लेते है। आज के युग में कलीसिया शैतान द्वारा बनायी गयी हर दीवार को ध्वस्त कर रही है। वह हमला कर रही है ताकि वह परमेश्वर के राज्य तक जाने वाले मार्ग को खोल सके। हमे यह बताया गया है, कि नरक के द्वार भी कलीसिया पर प्रबल नहीं हो सकते (मत्ति १६:१८) परन्तु वह लोग कौन हैं, जो नरक में जाएँगें

पर डरपोकों, और अविश्वासियों, और घिनौनों, और हत्यारों, और व्यभिचारियों, और टोन्हों, और मूर्तिपूजकों, और सब झूठों का भाग उस झील में मिलेगा, जो आग और गन्धक से जलती रहती हैः यह दूसरी मृत्यु है। (प्रकाशित वाक्य २१:८)

ऊपर दी गयी पँक्तियों में हमे सिखाया गया कि वह लोग जो डरपोक है, झूठ बोलते हैं तथा अविश्वासी है, वह सब, पुनरागमन पर एक ऐसे कुण्ड में डाले जाएँगें जहाँ आग और गंधक जलती होगीं हमें यह नही पता कि वह आग का कुण्ड सच्चा और वास्तविक होगा या केवल मृत्यु के बाद के जीवन का प्रतिरूप। व्यक्तिगत रूप से मैं इसके बारे में और जानना भी नही चाहता। वह कैसा भी हो, हम केवल इतना जानते है कि उस आग के कुण्ड में केवल दुःख और सर्वनाश ही होगा। बाईबिल नरक को गहन अन्धकार का नाम देती है (यहूदा १:१३) हमे प्रकाश व अंधकार के बीच में से एक चुनना है, अंनत जीवन के लिए या फिर नाश के लिए। यदि हम प्रकाश और अन्धकार की प्रकृति को समझें तो प्रकाश अच्छे स्वास्थ और पूर्ण संतुष्टि को दर्शाता है। पौधों को जीवन जीने के लिए प्रकाश की आवश्यकता है। प्रकाश हर वस्तु को प्रकाशमय करता है तथा पोषण देता है। वह जीवन भी देता है। हर एक वस्तु प्रकाश में ही चमकती है। अन्धकार ढाँपता है

और छिपाता है जहाँ प्रकाश नहीं होता वहाँ अंधकार होता है। मनोवैज्ञानिक बताते है कि यदि कोई व्यक्ति अधिक समय तक अन्धकार में रहता है तो वह जल्द ही उदासीनता व अन्य मानसिक रोगों से ग्रसित हो जाता है। अंधकार में रहना लोगों के लिए स्वस्थ विकल्प नहीं है। आग का कुण्ड भी एक ऐसा स्थान है जहाँ केवल अंधकार ही अंधकार है।

आज के युग में ऐसे स्थान के बारे में बात करना भी, जहाँ केवल अंधकार हो, पसन्द नही किया जाता। ऐसा कौन है, जो इस स्थान पर जाने के लायक है? मैं यह प्रश्न आप सब से पूछना चाहता हूँ कितने लोगों की हत्या करने के पश्चात् एक व्यक्ति हत्यारा बनता है? केवल "एक"। झूठा व्यक्ति कहलाने के लिए कितने झूठ बोलने होगें? केवल "एक"। एक पापी को कितने पाप करने होंगे, कि वह पापी कहलाया जाये? केवल "एक"। हम सब को एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता है, प्रभु यीशु जैसा कोई नही, जो हमारे पापों से तथा दण्ड से छुटकारा दिला सके।

प्रभु की ओर जाने वाले मार्ग का पहला कदम है इस बात को जानना कि हमें उद्धारकर्ता की आवश्यकता है। पौलूस कहता है-"१० जैसा लिखा है,कि कोई धर्मो नही, एक भी नहीं। ११ कोई समझदार नहीं, कोई परमेश्वर का खोजने वाला नहीं। १२ सब भटक गए हैं, सब के सब निकम्मे बन गए, कोई भलाई करने वाला नहीं, एक भी नहीं।" (**रोमियों ३:१०-१२**) पौलूस कहता है कि कोई भी धर्मी नही ठहराया जाता। व्यक्ति केवल कार्य करके धार्मिक नहीं ठहराया जाता, (न्याय, पद २०) वह कहता है कि बिना व्यवस्था के परमेश्वर की धार्मिकता प्रगट हुई है, अर्थात मसीह की मृत्यु आपके स्थान में। यह धार्मिकता तब आपको मिलती है, जब आप पश्चाताप करते है और उसके मार्ग पर चल देते है तथा उसको अपना राजा और प्रभु मानते हुए अपने जीवन रूपी सिंहासन पर विराजमान करते है। केवल यही एक मार्ग है जिसके द्वारा हम दुःख और विनाश के स्थान पर बच सकते है। (प्रेरितों के काम ४:१२) जब आप यह करते हैं तो आपका नाम जीवन की पुस्तक में लिखा जाता है (प्रकाशितवाक्य २७) एक ऐसी पुस्तक जहाँ उन सब का नाम लिखा है जिन्होंने अपना जीवन प्रभु को समर्पित कर दिया है और उसे उद्धारकर्ता मानते है। जिन लोगों का नाम उस पुस्तक में नहीं पाया जायेगा उनको आग के कुण्ड में प्रताड़ित किया जायेगा।

१४ और मृत्यु और अधोलोक भी आग की झील में डाले गए; यह आग की झील तो दूसरी मृत्यु है। १५ और जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला, वह आग की झील में डाला गया। (प्रकाशित वाक्य २०:१४-१५)

यह व्यक्ति परमेश्वर के क्रोध रूपी दाखरस को चखेगा तथा उसे स्वर्गदूतों व मेमने के सामने आग के कुण्ड में प्रताणित किया जायेगा। "१० तो वह परमेश्वर का प्रकोप की निरी मदिरा जो उसके क्रोध के कटोरे में डाली गई है, पीएगा और पवित्र स्वर्गदूतों के सामने और मेम्ने आग और गन्धक की पीड़ा में पडेगा। ११ और उन की पीड़ा का धुआं युगानुयुग उठता रहेगा, और जो उस पशु और उस की मूरत की पूजा करते है, और उसके नाम की छाप लेते है, उन को रात दिन चैन न मिलेगा।" (प्रकाशितवाक्य १४:१०-११)

जो बचाये नही गये उनका न्याय उनके द्वारा प्राप्त प्रकाश की मात्रा को देखकर किया जायेगा।

मैं समझता हूँ कि उस भयानक स्थान पर प्रताड़ना के अलग-अलग रूप होगे। कुछ ऐसे जन होगें जिन्हे उतना आलोकिक प्रकाश नहीं मिला होगा, जितना औरों को मिलता है। सच तो यह है कि वहाँ अनंतकाल की सज़ा विभिन्न स्तरों पे दी जाएगी। इससे पहले कि आप मुझे मारने के लिए पत्थर उठायें, आईए हम परमेश्वर के वचन को ध्यान से देखें।

४७ और वह दास जो अपने स्वामी की इच्छा जानता था, और तैयार न रहा और न उस की इच्छा के अनुसार चला बहुत मार खाएगा। ४८ परन्तु जो नहीं जानकर मार खाने के योग्य काम करे वह थोड़ी मार

खाएगा, इसलिये जिसे बहुत दिया गया है, उस से बहुत मांगा जाएगा, और जिसे बहुत सौंपा गया है, उस से बहुत मांगेगें।। (लूका १२:४७-४८)

हम सबको यह समझना चाहिए कि हम मे से कोई भी प्रभु येशु के बिना स्वर्ग में अनंत जीवन नही पा सकता परन्तु प्रभु उन लोगों को जानता है जिन्होने प्रभु के बारे मे नही सुना और वह उनकी सज़ा उसी के अनुसार तय करेगा। किन्तु हमे इसका कतई सन्देह नही कि उन लोगों को स्वर्ग की प्राप्ति नहीं होगी।

२) क्या तुम सोचते हो कि इस पृथ्वी पर प्रत्येक व्यक्ति के प्रभाव के अनुसार ही उसको अनन्त जीवन प्राप्त होगा?

जितना अधिक हमारा प्रभाव है उतनी ही अधिक हमारी जिम्मेदारी और जवाबदेही हो जाती है। वह लोग जो टेलीविजन पर आते है और लोकप्रिय होते है उनका जवानो पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है परन्तु फिर भी वे अनैतिक जीवन व्यतीत करते है। ऐसे व्यक्तिओं का न्याय अधिक कठोरता से होगा, क्योंकि उनका दूसरे के जीवन पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है।

जल्दबाज़ी करके प्रभाव के स्थान को न ग्रहण करिए। (मत्ति ७:३-५) में यीशु ने हमें बताया कि पहले हम अपनी आँख से लट्ठा निकालें तभी हम दूसरों की आँखों का तिनका निकाल पाएँगें। हम सभी यीशु के अनुयायी दूसरों को प्रभावित करने की क्षमता रखते है। विशेषकर जब हमें आस पड़ोस के लोग मसीही के रूप में जानते हो या हमारे कार्यस्थल पर हम मसीही होने के लिए जाने जाते हो। वह हमें देखते है कि हम अपना जीवन किस प्रकार व्यतीत करते हैं उनका उद्वार हमारे चाल चलन हद तक किसी न किसी रूप में शिक्षा देते है परन्तु हम शिक्षक नही है।

एक शिक्षक के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि वह परमेश्वर को महिमानवित करने वाला जीवन व्यतीत करें।

१ हे मेरे भाइयों, तुम मैं से बहुत उपदेशक न बनें, क्योंकि जानते हो, कि हम उपदेशक और भी दोषी ठहरेंगे। (याकूब ३:१)

न्याय के दिन मसीही अगुवों का न्याय सख्ती से होगा क्योंकि उन्होंने सबसे अधिक प्रकाश ग्रहण किया है और वह जीवन में प्रभावशाली स्थान पर रहें है। वह लोग भी जो मसीह को नहीं जानते परन्तु उनका जीवन दूसरों को अधिक प्रभावित करता है उन पर भी सख्ती से न्याय किया जाएगा। इस बात से यह स्पष्ट है कि जिस प्रकार प्रत्येक धर्मी व्यक्ति को विभिन्न प्रकार से पुरूस्कृत किया जाएगा, उसी प्रकार नरक में जाने वाले प्रत्येक व्यक्ति को विभिन्न स्तर के दण्ड दिए जायेंगे।

आइए अब हम एक ऐसा पद देखें यहाँ यीशु ने दो व्यक्तियों की कहानी बताई है कि जब उन दोनों की मृत्यु होती है और वह अपने आप को मृत्यु के पश्चात कहाँ पाते है? यह एक दृष्टांत नहीं है क्योंकि इससे दोनों में से एक व्यक्ति का नाम दिया गया है, जबकि दृष्टांतों में किसी का नाम नहीं दिया गया है। परमेश्वर ने इस कहानी में लाज़र का नाम इसलिए लिया है क्योंकि वह एक भिखारी था। मेरा मानना यह है, कि प्रभु यीशु एक सच्ची कहानी बता रहें है।

धनी मनुष्य और लाज़र-

१९ एक धनवान मनुष्य था जो बैंगनी कपड़े और मलमल पहिनता और प्रतिदिन सुख विलास और धूम-धाम के साथ रहता था। २० और लाजर नाम का एक कंगाल घावों से भरा हुआ उस की डेवढ़ी पर छोड़ दिया जाता था। २१ और वह चाहता था, कि धनवान की मेज पर की जूठन से अपना पेट भरे; वरन कुते

भी आकर उसके घावों को चाटते थे। २२ और ऐसा हुआ कि वह कंगाल मर गया, और स्वर्गदूतों ने उसे
लेकर इब्राहीम की गोद में पहुँचाया; और वह धनवान भी मरा; और गाड़ा गया।

---

[3] Charles R. Swindoll, Growing Deep in the Christian Life, Published by Multnomah Press, 1987. Page 324

२३ और अधालोक में उस ने पीड़ा में पड़े हुए अपनी आंखें उठाई, और दूर से इब्राहीम की गोद में
लाजर को देखा। २४ और उस ने पुकार कर कहा, हे पिता इब्राहीम, मुझ पर दया करके लाजर को भेज
दे, ताकि वह अपनी उंगुली का सिरा पानी में भिगों कर मेरी जीभ को ठंडी करे, क्योंकि इस ज्वाला में
तड़प रहा हूँ। २५ परन्तु इब्राहीम ने कहा; हे पुत्र स्मरण कर, कि तू अपने जीवन में अच्छी वस्तुएं ले चुका
है, और वैसे ही लाजर बुरी वस्तुएंः परन्तुु अब वह यहां शान्ति पा रहा है, और तू तड़प रहा है। २६ और
इन सब बातों को छोड़ हमारे और तुम्हारे बीच एक भारी गडढ़ा ठहराया गया है जो कि यहां से उस पार
तुम्हारे पास जाना चाहें, वे न जा सकें, और न कोई वहां से इस पार हमारे पास आ सके। २७ उस ने
कहा; तो हे पिता मैं तुझ से विनती करता हूँ कि तू उसे मेरे पिता के घर भेज। २८ क्योंकि मेरे पांच भाई हैं,
वह उन के सामने इन बातों की गवाही दे, ऐसा न हो कि वे भी इस पीड़ा की जगह में आएं। २९ इब्राहीम
ने उस से कहा, उन के पास तो मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकें हैं, वे उन की सुनें। ३० उस ने
कहा; नहीं, हे पिता इब्राहीम; पर यदि कोई मरे हुओं में से उन के पास जाए, तो वे मन फिराएंगें। ३१ उस
ने उस से कहा, कि जब वे मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की नहीं सुनते, तो यदि मरे हुओं में से कोई भी जी
उठे तौभी उस की नहीं मानेंगे।(लूका १६:१९-३१)

इससे पहले कि हम इस पद पर ध्यान दें हमारे लिए यह जानना महत्वपूर्ण होगा कि बाईबिल क्या कहती है, उन दो व्यक्तियों की आत्मा के लिए, कि वह मृत्यु के पश्चात कहाँ गई। बाईबिल में दो शब्दों का प्रयोग किया गया है। “नरक” और “इब्राहम के पास” यह बताने के लिए कि मरने के बाद इन दोनो व्यक्तियों की आत्माँए कहाँ पहुँची इन दो शब्दों के प्रयोग किया गया है। युनानी शब्द हेडीस (शियोल-पुराने नियम में) का अर्थ है नरक। हेडीस शब्द नए नियम में दस बार प्रयोग किया गया है। यीशु ने कहा जब उसका शरीर कब्र में दफनाया जाएगा तो वह पृथ्वी के हृदवय में होगा।

४० यूनुस तीन रात दिन जल-जन्तु के पेट में रहा, वैसे ही मनुष्य का पुत्र तीन रात दिन पृथ्वी के भीतर
रहेगा। **(मत्ती १२:४०)**

यीशु मृत्यु के पश्चात एक ऐसी जगह पर गए जिसको उन्होने “पृथ्वी का हृदवय (गर्भ) कहा”। पौलूस ने भी लिखा है ”कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे है; वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें।” (फिलिप्पियों २:१०) अधिकाँश लोग यह मानतें है कि हेडीस एक वास्तविक स्थान नहीं परन्तु आत्मिक स्थान है और वह दो भागों में बँटा हैं। एक भाग इब्राहम का है जिसे विश्वासियों का पिता कहा जाता है (KJV) या जिसे इब्राहम की गोद कहा जाता है। (NIV) तथा यह जगह एक व्यक्ति के बहुत ही करीब है। एक और शब्द का प्रयोग धार्मिकता के स्थान के लिए किया जाता है उसे फ़िरदौस (स्वर्ग) कहते है। यीशु ने इस शब्द का प्रयोग तब किया जब वह क्रूस पर उस डाकू के साथ लटके हुए थे जिसने विश्वास किया था। ”४३ उस ने उसे से कहा, मैं तुझ से सच कहता हूँ; कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा।।” **(लूका १३:२४)** किन्तु यह वह स्वर्गलोक नही है जिसका वर्णन उन्होंने मरियम से जी उठने वाले दिन पर किया गया था। “यीशु ने उस से कहा, मुझे मत छू क्योंकि मैं अब तक पिता के पास ऊपर नहीं गया” **(यहुन्ना २०:१७)** वचन इस बात की गवाही देतें है, कि जब मसीह की मृत्यु हुई, उसका आत्मा अधोलोक

१:१८) फिर वह उस स्थान पे गया जहाँ बहुत से संतों की आत्मांए थीं जिन्होंने परमेश्वर पर भरोसा किया था और उसने उन्हें “इब्राहीम की गोद” या फिर “पृथ्वी के गर्भ” से छुड़ा दिया। “परन्तु सचमुच मसीह मुर्दो मे से जी उठा है, और जो सो गए हैं, उन में पहिला फल हुआ।” (१ कुरिन्थियाँ १४:२०) यीशु वह प्रथम मनुष्य हैं जिन्होंने मृत्यु को क्रूस पर हमारे बदले जान देकर पराजित किया और (स्वर्गलोक) फ़िरदौस में प्रवेश किया।

मत्ती बतातें है येशु की मृत्यु के समय बहुत सी घटनांए घटी, वह बताते है कि उस समय एक भूकम्प आया जिससे मन्दिर का पर्दा दो भागों में ऊपर से नीचे तक फट गया। इसके पश्चात वह एक और बात बताते जो विस्तयजनक है।

५२ और कब्रें खुल गईं; और सोए हुए पवित्र लोगों की बहुत लोथें जी उठीं।५३ और उसके जी उठने के बाद वे कब्रों में से निकलकर पवित्र नगर में गए, और बहुतों को दिखाई दिए। **(मत्ती २७:४२-४३)**

क्या आप इस दृश्य की परिकल्पना कर सकते हैं? ये कहा जा सकता है कि जब यीशु की मृत्यु हुई, तब वह पवित्र आत्माऐं जो अधोलोक में धर्मीजन के स्थान पर थीं छुड़ा ली गयी। हमें यह नही बताया गया है कि यह आत्माऐं कितने समय तक लोगों को दिखाई दीं और न ही यह स्पष्ट है कि यह आत्माऐं किसकी थीं। इसलिए कि हमारे पास पर्याप्त जानकारी नहीं है हम कट्टर नहीं बन सकतें। परन्तु यह माना जा सकता है कि जब यीशु मरियम मग्दलीनी से मिलने के पश्चात स्वर्ग में उठा लिए गए, तब उनके साथ वह सभी धर्मी लोग भी स्वर्ग चले गए, जो इब्राहिम के किनारे खड़े हुए स्वर्ग जाने का इन्तजार कर रहे थे।

पौलूस अपने पत्र में जिसे उन्होंने इफीसियों के नाम लिखा था, कहते है कि यीशु पहले किसी दूसरी जगह जो पृथ्वी के नीचे स्थित है गए थे। फिर वहाँ से वह अपनी राजगद्दी संभालने चले गये।

८ इसलिये वह कहता है, वह ऊंचे पर चढ़ा, और बन्धुवाई को बान्ध ले गया, और मनुष्यों को दान दिए। ९ (उसके चढ़ने से, और क्या पाया जाता है केवल यह, कि वह पृथ्वी की निचली जगहों में उतरा भी था। १० और जो उतर गया यही वहीं है जो सारे आकाश से ऊपर चढ़ भी गया, कि सब कुछ परिपूर्ण करें)। (इफिसियों ४:८-१०)

यह जानना अत्यन्त महत्वपूर्ण हे कि प्रभु यीशु की मृत्यु तथा उसके जीवित होने के पश्चात अब कोई भी विश्वासी पृथ्वी के निचले भाग में नही जाता, वरन वह सीधा स्वर्ग पाता है जहाँ वह परमेश्वर के साथ होता है। (पद ८) से हम यह समझ सकते हैं, यीशु अपने साथ उन सभी धर्मीयों को स्वर्ग ले गया जो इब्राहम के साथ पृथ्वी के नीचे रूके हुए थे। अब हम यह जानतें हैं कि मसीह के पुनरूत्थान के पश्चात सभी विश्वासी अपनी मृत्यु के बाद प्रभु के पास जाते है। पौलूस कहता हैः

२२ पर यदि शरीर में जीवित रहना ही मेरे काम के लिये लाभदायक है तो मैं नही जानता, कि किस को चुनूं। २३ क्योंकि मैं दोनों के बीच अधर में लटका हूं; जी तो चाहता है कि कूच करके मसीह के पास जा रहूं, क्योंकि यह बहुत ही अच्छा है। २४ परन्तु शरीर में रहना तुम्हारे कारण और भी आवश्यक है। (फिलिप्पियों १:२२-२४) **(२ कुरिन्थियों ४:८ भी पढ़ें)**

अब हम वापस लूका-१६ के पद पर आते है। जिसे हम पढ़ रहे थें। हमें यह पता चलता कि हेडीस में इस क्षण क्या हो रहा है। यह एक, दो भिन्न व्यक्तियों की सच्ची कहानी है, जिससे उनकी दशा का पता चलता

है कि वह मृत्यु के पश्चात कहा गए थे। इस पद में लाज़रस और इब्राहम दोनो का नाम लिए गए हैं, और कुछ लेखों में तो “डाईव्ज़” (धनी पुरूष के लिए लातीन शब्द) दिया गया है जो उस धनी व्यक्ति के लिए प्रयोग किया गया।

<u>पद (१९-२१)-पृथ्वी पर दोनों मनुष्यों की दशा</u>

३) जब यह दोनों पृथ्वी पर थे तो कहानी में इनका वर्णन किस प्रकार से किया गया? आप क्या समझते हैं, कि जब इन दोनों व्यक्तियों की मृत्यु हुई होगी, तो इनके जीवन का उत्सव किस प्रकार से मनाया गया होगा?

बैंगनी रंग, यीशु के समय में आसानी से प्राप्त करने बाकी वस्तु नही थी। यह धनी जन (<u>टीरियन बैंगनी</u>)[4] बैंगनी या फिर कहा जा सकता है कि राजसी बैंगनी पहनता था। बिल्कुल उसी प्रकार जैसे आज के युग में प्राडा, अरमानी तथा और दूसरे अच्छे कपड़े पहने जाते है। उस समय यह रंग दुर्लभ था। अरस्तू ने इस रंग की कीमत सोने से दस से बीस गुना अधिक बतायी है। उस समय धनी व्यक्ति उच्च कोटि के कपड़े पहनता था। युनानी भाषा में इस कपड़े को “बूसोस” कहते थे। यह एक विशेष प्रकार की सीप से प्राप्त धागे से बुना जाता था।[5] रजसी पुरूष जैसे कि मिश्र देश के राजा तूतानकहामेन इस तरह का मंहगा कपड़ा पहनते थे। यह धनी व्यक्ति आलीशान जीवन जीता था। सबसे अच्छा भोजन, अच्छी शराब और सबसे सुन्दर महल में रहता था। यदि हम कहें कि यह व्यक्ति उस देश के जाने माने लोगों में से एक था तो यह गलत नहीं होगा। वह अपने समय का एक प्रभावशाली व्यक्ति था।

हमें बताया गया है कि लाज़रस उस धनी व्यक्ति के घर के सामने दरवाज़े पर पड़ा रहता था। वहाँ युनानी शब्द “बालो” का प्रयोग किया गया हैं। जिसका अर्थ है “लेटा हुआ” किन्तु इसका सही अर्थ है “लेटा हुआ” किन्तु इसका सही अर्थ है “फेंका हुआ” उस व्यक्ति को बाहर निकालकर फेंक दिया गया था। और उसके प्राण शरीर से धीरे-धीरे निकल रहे थे। वह शायद धनी व्यक्ति के घर के उस दरवाज़े पर पड़ा हुआ था, जहाँ से नौर आया-जाया करते होगे। वही पर बचा हुआ भोजन भी फेंक दिया जाता था। जिसे कुत्ते खाते थे, और लाज़रस के घाव को भी चाटा करते थे। यह स्पष्ट है कि लाज़रस बहुत बीमार था और उसके पूरे शरीर पर फोड़े निकल हुए थे। वह उस धनी व्यक्ति के घर से फेंके हुए भोजन पर ही जी रहा था। वह इतना बीमार था कि वह और कहीं नही जा सकता था। और बस भिखारियों की तरह फेंके हुए टुकड़ों पर जी रहा था। विलियम बारक्ले बताते है कि,

उस समय काँटे चम्मच की सुविधा नहीं होती थी, भोजन हाथ से ही खाया जाता था। सम्पन्न घरों में हाथ रौटी से ही पोछे जाते थे और फिर उन्हें फेंक दिया जाता था। लाज़रस इन्हीं रोटियों की प्रतीक्षा करता था।[6]

कुत्ते उसके घाव चाटते रहते थे, वह शायद इतना दुर्बल था कि वह उन कुत्तों को भगा भी नही सकता था। यह स्पष्ट नहीं है कि धनी व्यक्ति ने लाज़रस को वहाँ फिकवाया था, क्योंकि वह उससे सहायता मांगने गया था, या फिर लाज़रस को उस शहर के लोगों ने वहाँ फिंकवाया था, क्योंकि उन्हें डर था कि उसका रोग शहर में न फैल जाए। लाज़रस अपनी मदद के लिए कुछ नहीं कर सकता था। वह केवल बचा हुआ भोजन चाहता था, पर वह भी उसे कुत्तों से छीनकर खाने को मिलता था। यह स्मरण रहे कि उस समय ज्यादातर कुत्ते पालतू नहीं होते थे।

<u>पद २२-२६ अनन्तकाल में दोनों व्यक्तियों की दशा</u>

यह स्पष्ट नही बताया गया है कि लाज़रस की मृत्यु पर उसके लिए कुछ किया गया था या नहीं। उसे तो शायद दफ़नाया भी नही गया था। यह समझा जा सकता है कि किसी को भी उसकी चिन्ता नही थी, न ही

तब जब वह जीवि था और न ही तब जब उसकी मृत्यु हुई।यह बात यूँ स्पष्ट है क्योंकि वचन में इसके बारे में कुछ नही लिखा, परन्तु उस धनी व्यक्ति के लिए स्पष्ट लिखा गया है कि “उसे विधिवत दफ़नाया गया था” और हम यह अनुमान लगा सकते है कि वह कितनी बड़ी सभा होगी हो सकता है सार्वजनिक शोक भी मनाया गया हो। शायद उसके मृत शरीर को जेतून की पहाड़ी पर जो येरूशलम में है, दफनाया गया होगा, जहाँ केवल धनी पुरूषों को ही जगह मिलती थी।

---

[4] http://en.wikipedia.org/wiki/Tyrian_purple

[5] http://en.wikipedia.org/wiki/Byssus

[6] William Barclay, Daily Study Bible, Printed by Saint Andrew Press, 1976, page 214.

उसकी मृत्यु पर शायद विशेष शोक मनाने वाले बुलाए गए होंगे। जैसे की उस समय की प्रथा थी। परन्तु मृत्यु के पश्चात उस धनी पुरूष ने अपने आप को नरक में पाया। जब वह जीवित थे तो सभी धनी व्यक्ति का नाम जानते थे, अब समय ने करवट ले ली थी और लाज़रस को सब जानते थे, परन्तु धनी व्यक्ति को कोई नहीं पहचानता था। कितनी दुःख की बात है कि लोग यह समझते हैं कि मृत्यु अन्त या विनाश है और जब वह लोग मृत्यु के पश्चात महसूस कर पाते है तो उन लोगों को कैसा लगता होगा।

४) कुछ लोग कहते है कि जब मृत्यु आती है तो हमारा अस्तित्व अर्थात हमारी आत्मा एक गहरी निंद्रा में सो जाती है। जहाँ किसी भी प्रकार की अनुभूति नही होती। आप क्या सोचते है कि यह पद हमें क्या अलग सिखाता है?

सबसे पहली बात जो धनी पुरूष अनुभव करता है वह यह है कि वह अत्यन्त पीड़ा में है। (पंक्ति १३) में युनानी भाषा का शब्द “बसानोस” का प्रयोग किया गया है जिसका अर्थ है “सबसे निचले स्तर की यातना” इस युनानी शब्द से यह समझा जा सकता है कि नरक में अलग-अलग प्रकार की यातनाऐं दी जायेंगी, और सबसे निचले स्तर की यातना वो है जिसे यह व्यक्ति अनुभव कर रहा है। (वर्तमान काल में इसलिए, क्योंकि वह पुरूष अभी भी यह यातनाऐं सह रहा है) हमे यह भी बताया जाता है कि उस व्यक्ति की जीभ भी जल रही थी और उसे पानी की आवश्यकता थी, ताकि वह अपनी जीभ को ठण्डा कर सके। जबकि उसका शरीर नहीं था। फिर भी उस व्यक्ति को पीड़ा की अनुभूति हो रही थी। वह व्यक्ति देख भी सकता था और पहचान भी सकता था। क्योंकि वह लाज़रस को देखता है और इब्राहम को पहचानता है। कितना दर्दनाक होगा वह दृश्य जब वह पुरूष स्वर्ग भी देख सकता है परन्तु वह इस बात को जानता है कि वह कभी उसे पा नही सकता।

आगे जा कर हम उस बड़े सफेद चमकदार सिंहासन के बारे में पढ़ते है। (प्रकाशितवक्य २०:११-१४) कि मृत्यु और नरक दोनो ही उस अग्नि के कुण्ड में फेंके जाते हैं, और वहाँ केवल अन्धकार ही है। इसके पश्चात वह धनी पुरूष आगे कुछ भी नही देख पाएगा। वह बोल सकता है और इब्राहम को पुकार के अपनी पीड़ा भी बताता है। परन्तु लाज़रस के प्रति उसके व्यवहार में कोई अन्तर नहीं आता। वह लाज़रस से पानी माँगता है उसे निर्देश देता है कि वह उसके भाईयों से मिलकर आए। वह इब्राहम से बहुत चालाकी से बात करता है और पिता कहकर यह दिखाने के लिए संबोधित करता है कि वह इब्राहम की पीढ़ियों में से है और उसका रिश्तेदार है क्योंकि उसका जन्म एक ऐसे देश में हुआ है, जो परमेश्वर पर विश्वास करता है। यह धनी व्यक्ति कितने धोखे में था। बिलकुल उसी प्रकार जैसे कि बहुत

से लोग एक इसाई देश में पैदा होते है और अपने आपको मसीही कहते है। परन्तु उनमें से कोई भी परमेश्वर के साथ संबन्ध में नही होता।

इस धनी मनुष्य को इब्राहम की बातें सुनायी दे रही थी। वह उसको सुन सकता था। और इब्राहम उस धनी मनुष्य को उत्तर देता है तथा यह बताता है कि कुछ ऐसी चीजे है जो उस व्यक्ति के साथ अनन्त समय तक रहेगी। यह एक अत्यन्त सामर्थी कथन था, सच्चाई से भरा हुआ किन्तु निराशाजनक। वह अपना जीवन जिसे उसने पृथ्वी पर बिताया था हमेशा याद रखेगा और वह सब भी जो उसने खो दिया। वह सारे अवसर, जो उसने खो दिए, जब वह अपने जीवन को ईश्वर को समर्पित कर सकता था। कितना दुःखदायी होगा यह सब। मन में स्पष्टता तब भी होगी शायद अब से भी कहीं और ज्यादा स्पष्टता। कितनी अधिक ग्लानी होंगी। क्योंकि हम अपनी गलतियों को सुधार नही पायेंगे। उस धनी व्यक्ति के पास अब ऐसा कोई नहीं है जो उसके साथ प्रार्थना कर सके और उसे इस स्थिति से बाहर निकाल सके।

[7] Finnis Jennings Dake, Dakes Annotated Reference Bible, Copyright 1961 by Finnis J. Dake. Page 80 of the New Testament.

शैतान का सबसे बड़ा झूठ यही है, कि वह हमे बहाकाता है हम मृत्यु के बाद भी स्थिति को बदल सकते है। धनी व्यक्ति को यह बताया गया है कि उन लोगों के बीच में जो खाई है, वह स्थान निर्धारित है, उसे पार नही कर सकते।जहाँ मृत्यु हमें ढूंढ लेती है, वही अनन्त जीवन हमे बाँध लेता है। वचन को देखने से हमें पता चलता है, न तो कोई सीमित यातना का स्थान है, न पुनर्जन्म और न ही इससे बचा जा सकता है। अपने अनंतकाल को बदलने के लिए हमें अपनी मृत्यु से पहले ही कुछ करना होगा नहीं तो बहत देर हो जाएगी।

तो क्या धनवान होना पाप है? क्या वह व्यक्ति जो निर्धन है, इसलिए स्वर्ग जाएगा क्योंकि वह निर्धन है। उस धनी व्यक्ति ने ऐसा क्या किया होगा कि उसे नरक की यातना सहनी पड़ी। उसने बहुत पाप किए होगे परन्तु उसका सबसे बड़ा पाप था कि वह अपने जीवन को जो परमेश्वर के बिना ही बिताने में खुश था। उसके पास जीवन में सब कुछ था, और वह केवल अपने लिए ही सोचता था। यह सत्य है कि उसने कभी लाज़रस की सहायता कर सकता था परन्तु उसने ध्यान ही नहीं दिया और उसने उसे मारने के लिए छोड़ दिया। उसके लिए तो यह एक साधारण सी बात थी कि वह एक खुशहाल जीवन व्यतीत कर रहा था और लाज़रस दुःख और दर्द से भरा जीवन बिता रहा था। उसने एक साथी इनसान को भूख दर्द से तड़पते देखा पर कोई कदम नहीं उठाया। लाज़रस अत्यन्त दुखी था और ईश्वर के बिना संतुष्ट नहीं था वह परमेश्वर को पुकारता था और उसने परमेश्वर को दयांवत और अनुग्रहकारी पाया। परन्तु धनी व्यक्ति को ईश्वर की आवश्यकता ही नही थी। ये दोनों व्यक्ति हम मनुष्य के जैसे ही संसार में जन्मों थे। पौलुस इफिसियों की पत्री में हम सब की दशा समझाते हुए कहते हैं,

१२ तुम लोग उस समय मसीह से अलग और इस्त्राएल की प्रजा के पद से अलग किए हुए, और प्रतिज्ञा की वाचाओं के भागी न थे,और आशाहीन और जगत में ईश्वर रहित थे। (इफिसियों २:१२)

इस पृथ्वी पर परमेश्वर हमें बहुुत सारे अवसर प्रदान करता है कि हम अपने लिए सही मार्ग चुन सके, यह हर व्यक्ति की एक अत्यन्त ही आवश्यक ज़रूरत है कि हम परमेश्वर को खोज लें। मृत्यु के पश्चात परमेश्वर हमारे प्रत्येक चुनाव को आदर करेगा। यदि हम परमेश्वर के बिना ही जीवन बितायेंगे तो वह भी हमे मृत्यु के पश्चात ऐसे ही छोड़ देगा यदि आप अपना जीवन ईश्वर के बिना ही जी रहें है तो अभी समय है, उसको पुकारिए क्योंकि अभी हमारे लिए उसका अनुग्रह उप्लब्ध है। अगले क्षण का इन्तज़ार क्यों करें? यह निश्चित है कि शैतान हमे बहकाने की कोशिश करेगा कि हम ईश्वर को न पुकारें और आज के

संदेश का प्रतिउत्तर किसी और दिन देने के लिए छोड़ दे, परन्तु मसीह बाहें फैलाए हमारी प्रतीक्षा कर रहा है।

<u>पंक्तियाँ २७-२१ -एक प्रार्थना उन लोगों के लिए जो अभी जीवित हैं</u>

वह धनी पुरूष क्यों अपने भाईयों के लिए जो अभी भी पृथ्वी पर थे, चिंतित था? उसने दो बार नरक में प्रार्थना की। पहली प्रार्थना जल के लिए थी और दूसरी उसके भाईयों के लिए पृथ्वी पर थे। परन्तु उसकी प्रार्थना नहीं सुनी गई। वह अपनी ज़िम्मेदारियों की ओर विश्वासयोग्य नही था। खास तौर से उसकी वह ज़िम्मेदारियाँ जो उसके भाईयों के तरफ़ थी। उसने उनके सामने एक गलत उद्धाहरण रखा था, एक ऐसे जन का जो परमेश्वर के बिना संतुष्ट था। अब उसे पता था कि उसके भाई एक गलत जीवन व्यतीत कर रहें है, एक ऐसा जीवन जिसमें परमेश्वर की कोई जगह नही थी। एक व्यक्ति की दशा और बुरी हो जाती है, जब उसके साथी भी उसके साथ हमेशा के लिए नरक में बन्द कर दिए जायँगें। जैसा की हमने कहा है कि हम में से प्रत्येक व्यक्ति दूसरे पर अच्छा या बुरा प्रभाव डालता है। आईए, हम अपना जीवन उन लोगों के लिए जो हमारे नमूने पे अपना जीवन जीते है, समर्पित करें। हमारे भाई, हमारी बहने, पुत्र, पुत्रियाँ और हमारे रिश्तेदार हमे अपना जीवन पूर्ण रूप से मसीह के लिए जीना है। दूसरों का जीवन भी हम पर निर्भर करता है।

उस धनी व्यक्ति के भाईयों को क्यों नही सन्देश पहुँचाया गया? उसे यह बताया गया कि उसके भाईयों के पास परमेश्वर का वचन हैं। (उस समय मूसा के वचन तथा अन्य भविष्यद्धक्ता के लेख उन लोगों के पास हुआ करते थे) और उसके भाईयों के पास यह गवाही काफ़ी थी।

परमेश्वर कभी झूठ नही बोलता (इब्रानीयों ६:१८) तो यदि वह परमेश्वर के वचन पर विश्वास नहीं करते तो यदि कोई मृतक भी जी उठे तो भी भरोसा नही करेंगे। परमेश्वर द्वारा दिया वचन ही सबसे बड़ा सबूत है, जिसे मानकर हम मृत्यु के पश्चात के जीवन की तैयारी कर सकते है, क्योंकि मृत्यु उपरान्त जीवन की भयानकता को हम अनदेखा नहीं कर सकते। यदि हम इसे दरकिनार कर दें तो हमारा अनंतकाल खतरे में है।

यह पाठ हमें क्या शिक्षा देते है।

१) ईश्वर को खोजने का समय अब है इसे आगे के लिए न छोडे।

२) हमारे कामों के परिणाम पृथ्वी पर नहीं अनन्तकाल में भी हमें मिलते हैं।

३) हम इस बात को नही समझते कि हमारे जीवन से बहुत से लोग प्रभावित होतें है।

४) परमेश्वर का वचन ही सबसे महत्वपूर्ण साक्ष्य है, जो हमें मृत्यु उपरान्त जीवन के लिए तैयार करता है।

हमारी आर्थिक दशा चाहे कैसी भी हो, यदि हमारे पास परमेश्वर नहीं है तो जीवन नही। (१ यहुना १२)

<u>प्रार्थना</u>: हे पिता तेरा धन्यवाद देते है, कि तूने हमे इतने स्पष्ट शब्दों में यह बताया है कि हम किस प्रकार अनन्त जीवन के लिए तैयारी कर सके। मैं यह प्रार्थना करता हूँ कि वह सब लोग जिन्हें अनन्त जीवन के बारे में नही पता। आपसे प्रार्थना करें और परमेश्वर को तब तक ढूंढें जब तक कि उन्हें अनन्त जीवन प्राप्त न हो जाए। होने दे कि हम में से एक जन तेरे बिना जीवन जीने में सन्तुष्ट न हों। हमारी सहायता कर कि हम उन लोगों को जो तुझे नही जानते तेरे पास ला सकें और उनको अंधकार के राज्य से ज्योति के राज्य में प्रवेश करा सकें। **आमीन**।।